[श्रीमती सत्या बहिन]

लोग राष्ट्र की एकता को तोड़ने वाले लोग हैं, और उनको प्रोत्साहित करने वाले लोगों को भी राष्ट्रद्रोही साबित करना चाहिए।

SPECIAL MENTIONS

Anti-India Resolution adopted at O.I.C. Conference

SHRI INDER KUMAR GUJRAL (Bihar): Madam, I rise to make a special mention about the Islamic Conference resolution passed in Karachi. The resolution would have caused concern, to all of us, not so much because ox what it says about Kashmir since that is familiar to us, since Pakistan repeats it so often ,and the bal-tant lies of it are known to us. But, more importantly, I feel concerned because the Foreign Ministers of friendly countires who were attending the Conference have not appreciated the implications of the way the Pakistani diplomacy has led them up the garden path. Indian Foreign Policy, in all these years; has attached a great deal of importance to friendship with the countries of the Arab world on the one hand and with the countries of Africa and Asia on the other. There has been no occasion—I say repeatedly and I emphasise 'no occasion'—when India has not upheld the causes and interests of the countries irrespective o'f their ethnicities or religious beliefs. Pakistan has its own history and purpose in disinforming the world. But, may I say that my disappointment, surely, is that the prudence and insight of the worthies who attended the Conference did not appreciate and understand the Indian polity which is both pluralistic land secular. Our democratic 'structure has always accorded equality of rights to all its citizens, wherever they may be living and whatever their religious beliefs may be. I do not have to-elaborate this in this worthy House. But when the resolution of the OIC reaffirms "commonality of goals" and the "destinies of the Islamic Ummah", it has deliberately ignored the fact that population-wise, India has the second largest Muslim population in the world. The Indian Muslim, I say with pride, are second to none in their patriotism and commitment to India and their place in the Indian polity is second to none. The effort to generate alienations and disbeliefs air ongst them is a mischievous one and that is what Pakistan is trying to do. We also know that the voices of Egypt Turkey, Tunisia and Algeria regarding the Pakistan-sponsored terrorism are loud and audible this world over. The mischief of terrorism against a neighbouring country was started by Pakistan much earlier. Now it is spreading elsewhere as well. The issue that the worthy members o'f the OIC must keep it mind is that the Pakistan-sponsorec terrorism, and subversion are the issues causing pain and suffering no only to the Kashmiri people but to the entire Indian population, includ ing the large population of Muslim in India'.

The Government of India, may say, should redouble its efforts, on bilateral basis, to explain and eluci date our policies to those who recent ly visited Karachi. To my compal riots in India, I would say that th OIC resolution need not be taken ver seriously. But we must always ked in mind the fact that our own strengt and security have to be basically in ternal, based on secular unity. Tha. you.

THE DEPUTY CHAIRMAN: M: Suresh Kalmadi. *(Interruption).* will allow you, Mr. Afzal. His nar is there. I will allow you also.

SHRI SURESH KALMADI (Mah rashtra): I fully endorse whatey Gujralji has said except his last se tence that this need not fee taken 1 seriously. I think, Madam, for to first time, we shall have to take 1 matter very seriously because 52 cot;

tries have got together and they have endorsed the Secretary-Gneral's report in the Conference. Also, they have been successful in having this matter put up in the agenda of the next Conference to come up. So they are keeping the matter going. The report of the OIC Secretary and that of the fact-finding Commission on Kashmir asked the 52 member-states to consider imposing economic sanctions against India pending reversal of "India's repression in Kashmir". It is stated: "Theq also asked the member-States to extend 'full political, diplomatic, moral and material support' to the Muslim people of Kashmir for realisation of their right to self-determination."

Madam, this is a very serious matter and the impact of it is bound to be there in Kashmir. Mischief in Kashmir will go 'up and I think a tremendous counter offensive will have to be put up by the Government of India. All our embassies in the 52 countries must immediately be activated. We should point out to them the wrong direction in which Pakistan has been successful in leadin the Islamic Countries. Also, the conference was divided on terrorism. It is a very thin line. Whether they are going for terrorism or for the struggle for liberation, they have not been able to differentiate on that. There is a division on that. But this is a very serious threat to Kashmir and India and we should really ask all the embassies that they must jo and tell them that they should not interfere in the internal affairs of India. Thank you, Mladam.

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल (उत्तर प्रदेश) : मैडम डिप्टी चेयरमैन जो गुजराल साहब ने कहा है ,मैं उससे अपने आपको एस्सोसियेट करता हूं और मजीद यह बात कहता हूं जैसे कि गुजराल साहब ने फरमाया बहैसियत एक मुसलमान मैं यह महसूस करता हूं कि ओ०आई सी० में या इस्लामिक कंट्रीज में जो मुसलमानों के ताल्लुक से आवाज उठाई है, उससे लगता है कि जैसे बड़ी हमदर्दी का इजहार हो रहा है। लेकिन मैं यहां इतना बताना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान के मुसलमानों की तरफ से कई बार यह रिप्रेजेंटेशन किया गया कि हिन्दुस्तान दुनियां का दूसरा बड़ा मुल्क है जिसमें सबसे ज्यादा मुस्लिम आबादी है। इस बात की कोशिश की गई कि ओ0आई0सी0 में हिन्दुस्तानी मुसलमानों को रिप्रेजेंटेशन मिले लेकिन नाकाबिले तरदीद बात यह है कि ऐसा कभी भी नहीं हुआ और हिन्दुस्तानी मुसलमानों को वहां बैठने को कभी इजाजत नहीं दी गई। यह कहकर के इजाजत नहीं दी गई क्योंकि हिन्दुस्तान एक मुस्लिम कंट्री नहीं है इसलिये यहां हिन्दुस्पतानी मुसलमानों का रिप्रेजेंटेशन नहीं हो सकता। वह शुरू से ही इस बात के खिलाफ रहे हैं। अगर एक मुसलमान की हैसियत से मुझे वहां बैठने का हक नहीं है तो फिर मुसलमान की हैसियत से मेरे मसायल से उनको कोई दिलचस्पी नहीं होना चाहिये खास तौर से जो हमारे अन्दरूनी मसायल हैं बाबरी मस्जिद का मसला हो या कश्मीर का मसला हो यह बिलाशुबहा हिन्दुस्तान। का अन्दरूनी मामला है। बहैसियत एक मुसलमान अगर कोई इस पर इहतजाज करता है तो उसको इसका हक है तो हो सकता है लेकिन जिस तरह पाकिस्तान में हुआ, बंगलादेश में हुआ, मैंने उस वक्त भी इस की मज्जमत की थी। वहां जिस तरह बेगुनाह हिन्दुओं को मारा गया, जिस तरह बेगुनाह बच्चो को नुक्सान पहुंचाया गया, जिस तरह वहां रहने वाले बुगेनाह हिन्दुओं के मंदिरों को तोड़ा गया, वह काबिले अफसोस था, काबिले मज्मजत था। मैंने उस वक्त भी इसकी मज्जमत की थी और आज भी करता हूं। जहां तक पाकिस्तान का ताल्लुक है वह हिन्दुस्तान के मुसलमानों के लिये किसी आफत से कम नहीं है। जब से पाकिस्तान बना है हम उसकी सजा भोग रहे हैं। हमारे ऊपर यहां पर अंगुली उठाई जाती है, जब वो लोग बोलते हैं तो हमारी सर्विस कम करते हैं, हमारे लिये मुश्किलें ज्यादा

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल

पैदा करते हैं। मैं पाकिस्तान से पूछना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान के जिन लोगों ने यह ऑप्शन दिया था कि हम पाकिस्तान जाकर के रहेंगे तो क्या आज तक वे पाकिस्तानी हुए हैं ? मेरा ख्याल है कि नहीं ? आज भी वे मुहाजिर कहलाते हैं वहां पर उन्होंने तंग आकर एक मुहाजिर कौमी मूवमेंट बनाया जिसके बाकायदा वहां पर साजिश के जरिये से दो टुकड़े किये गये। मुहाजरीन के जो हकूक हैं, वह हमेशा दबाये गये और उनको कभी कोटा नहीं दिया गया सर्विसेज के अन्दर, तनासुब के अन्दर नाइन्साफी बरती गई । जहां तक ओ0आई0सी0 का ताल्लुक है उसका एक रेजोल्यूशन आया । गुजराल साहब ने जो कहा है बहैसियत हिन्दुस्तानी मुसलमान मैं यह कहता हूं कि हम इस मुल्कके उतने ही बराबर के शहरी हैं जितने कि यहां पर दूसरे लोग हैं। हम यहां अपनी लड़ाई, अपने मसायल को हल करने की सकत रखते हैं। अगर किसी को हमसे अखलाकी हमदर्दी है तो मुझे इस पर कोई एतराज नहीं है। लेकिन अगर कोई साजिशी हमदर्दी करता है हमारे साथ तो मैं यह बताना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान के 15–20 करोड़ मुसलमानों को वैसी हमदर्दी नहीं चाहिए । वह हमदर्दी हमारे लिये नुक्सानदेह होती है। मैडम, मैं यह कहूंगा कि यह जो रिजोलूशन आया है बिला शुबहा पूरी दुनिया के अन्दर बाबरी मस्जिद टूटने के एक इंप्रेशन पड़ा है । मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि अभी साउदी अरब गया था। वहां तीन-साढ़े तीन लाख हिन्दू काम करते हैं । बाबरी मस्जिद टूटने के बाद उन हिन्दुओं को जो परेशानी हो रही है वह मैंने अपनी आंखों से देखी है। उसको हमें महसूस करना चाहिये । मैंने वहां कई लोगों से बात की, जो हिन्दू वहां पर काम कर रहे हैं इनका कोई कसूर नहीं है इस मामले में। इसलिये उनके ऊपर इसका रद्दे अमल नहीं होना चाहिये लेकिन यहां पर भी बैठे हुये जो लोग यह समझते हैं कि हिन्दुस्तान ही सारी दुनिया से उनको भी यह समझना चाहिये कि हमारे हिन्दुस्तानके कितने हिन्दू भाई दूसरे मुमालिक में काम कर रहे हैं और उनके ऊपर इन सब चीजों का कितना बुरा असर पड़ा है। मैंने तो हिन्दू भाईयों को साउदी अरब के अन्दर यह कहते हुये सुना है कि इन्होंने बाबरी मस्जिद तोड़कर हमारे पेट पर लात मारने का काम किया है। आज यह बात हमको भी यहां महसूस करनी चाहिये और जो लोग इस किस्म की हरकत कर हैं उनको भी यह समझना चाहिये कि हिन्दुस्तान कभी आइसोलेशन में नहीं जी सकता है। रिएक्शन होता है और बड़ा नेचुरल होता है लेकिन हमको तनाव को कम करके ऐसा माहौल पैदा करना चाहिये । कि न उधर से ऐसा मौका मिले और कोई अपने मफाद के लिये इसका फायदा न उठा सके । शुक्रिया ।

†[شری محمد افضل عرف م- افضل :
(اتر پردیش): میڈم ڈپٹی چیئر مین- جو گجرال صاحب نے کہا ہے - میں اس سے اپنے آپ کو ایسو سی ایٹ کرتا ہوں اور مزید یہ بات کہتا ہوں جیسے کہ گجرال صاحب نے فرمایا بحیثیت ایک مسلمان میں یہ محسوس کرتا ہوں کہ او- آئی-سی میں یا اسلامک کنٹریز میں جو مسلمانوں کے تعلق سے آواز اٹھائی جاتی ہے اس سے لگتا ہے کہ جیسے بڑی ہمدردی کا اظہار ہو رہا ہے - لیکن میں یہاں اتنا بتانا چاہتا ہوں کہ ہندوستان کے مسلمانوں کی طرف سے کئی بار یہ ریپرزنٹیشن کیا گیا کہ ہندوستان دنیا کا دوسرا بڑا ملک ہے جس میں سب سے زیادہ مسلم آبادی ہے - اس بات کی کوشش کی گئی کہ او- آئی - سی - میں ہندوستانی مسلمانوں کو ریپرزنٹیشن ملے لیکن ناقابل تردید بات یہ ہے کہ ایسا کبھی بھی نہیں ہوا اور ہندوستانی مسلمانوں کو

وہاں بیٹھنے کو کبھی اجازت نہیں
دی گئی - یہ کہکر کے اجازت نہیں
دی گئی کہ کیونکہ ہندوستان ایک
مسلم کنٹری نہیں ہے اسلئے یہاں
ہندوستانی مسلمانوں کا ریپرزنٹیشن
نہیں ہو سکتا - وہ شروع سے ہی
اس بات کے خلاف رہے ہیں اگر ایک
مسلمان کی حیثیت سے مجھے
وہاں بیٹھنے کا حق نہیں ہے - تو
پھر مسلمان کی حیثیت سے میرے
مسائل سے انکو کوئی دلچسپی نہیں
ہونی چاہئے خاص طور سے ہمارے
اندرونی جو مسائل ہیں - بابری
مسجد کا مسئلہ ہو یا کشمیر کا
مسئلہ ہو یہ بلا شبہ ہندوستان کا
اندرونی معاملہ ہے - بحیثیت
مسلمان اگر کوئی اسپر احتجاج کرتا
ہے تو اسکو اسکا حق تو ہو سکتا ہے
لیکن جسطرح پاکستان میں ہوا -
بنگلہ دیش میں ہوا - میں نے
اسوقت بھی اسکی مذمت کی تھی -
وہاں جسطرح بے گناہ ہندوؤں کو
مارا گیا - جسطرح بےگناہ بچوں کو
نقصان پہنچایا گیا - جسطرح وہاں
رہنے والے بےگناہ ہندوؤں کے مندروں
کو توڑا گیا وہ قابل افسوس تھا
قابل مذمت تھا - میں نے اسوقت
بھی اسکی مذمت کی تھی اور آج
بھی کرتا ہوں - جہانتک پاکستان
کا تعلق ہے وہ ہندوستان کے مسلمانوں
کیلئے کسی آفت سے کم نہیں ہے
جب سے پاکستان بنا ہے ہم اسکی
سزا بھوگ رہے ہیں - ہمارے اوپر
یہاں پر انگلی اٹھائی جاتی ہے -
جب وہ لوگ بولتے ہیں تو ہماری
سروس کم کرتے ہیں- ہمارے مشکلیں
زیادہ پیدا کرتے ہیں میں پاکستان
سے پوچھنا چاہتا ہوں ہندوستان

کہ جن لوگوں نے یہ آپشن دیا تھا
کہ ہم پاکستان بناکر کے رہینگے تو
کیا وہ آجتک پاکستانی ہوئے ہیں-
میرا خیال ہے کہ نہیں - آج بھی
وہ مہاجر کہلاتے ہیں وہاں پر
انہوں نے تنگ آکر ایک (مہاجر
قومی موومنٹ) بنایا - جسکے باقاعدہ
وہاں پر سازش کے ذریعہ دو ٹکڑے
کئے گئے - مہاجرین کے جو حقوق
ہیں وہ ہمیشہ دبائے گئے اور انکو
کبھی کرنا نہیں دیا گیا سروسز نے
اندر - تناسب کے اندر نا انصافی
برتی گئی جہانتک او - آئی - سی-
کا تعلق ہے اسکے ایک ریزولیشن ایا -
گجرال صاحب نے جو کہا ہے -
بحیثیت ہندوستانی مسلمان میں
یہ کہتا ہوں کہ ہم اس ملک کے
اتنے ہی برابر کے شہری ہیں جتنے
کے یہاں پر دوسرے لوگ ہیں - ہم
یہاں اپنی لڑائی - اپنے مسائل کو
حل کرنے کی سکت رکھتے ہیں -
اگر کسی کو ہم سے اخلاقی ہمدردی
ہے تو مجھے اس پر کوئی اعتراض
نہیں ہے - لیکن کوئی سازشی
ہمدردی کرتا ہے ہمارے ساتھ تو
میں یہ بتا دینا چاہتا ہوں کہ
ہندوستان کے ۱۵-۲۰ کروڑ مسلمانوں
کی ویسی ہمدردی نہیں چاہئے -
وہ ہمدردی ہمارے لئے نقصان دہ
ہوتی ہے -

میڈم - میں یہ کہونگا کہ یہ
جو رزولیشن آیا ہے بلا شبہ پورے
دنیا کے اندر بابری مسجد ٹوٹنے سے
ایک امپریشن پڑا ہے - میں آپکو
یہ بتانا چاہتا ہوں کہ میں ابھی
سعودی عرب گیا تھا - وہاں تین
ساڑھے تین لاکھ ہندو کام کر رہے ہیں-

بابری مسجد توڑنے کے بعد ان ہندوؤں کو جو پریشانی ہو رہی ہے وہ میں نے اپنی آنکھوں سے دیکھی ہے - اسکو ہمیں محسوس کرنا چاہئیے - میں نے وہاں کئی لوگوں سے بات کی جو ہندو وہاں پر کام کر رہے ہیں انکا کوئی قصور نہیں ہے اس معاملہ میں - اسلئیے انکے اوپر کوئی رد عمل نہیں ہونا چاہئیے لیکن یہاں پر بھی بیٹھے ہوئے جو لوگ یہ سمجھتے ہیں کہ ہندوستان ہی ساری دنیا ہے انکو بھی یہ سمجھنا چاہئیے کہ ہمارے ہندوستان کے کتنے ہندو بھائی دوسرے ممالک میں کام کر رہے ہیں اور انکے اوپر ان سب چیزوں کا کتنا برا اثر پڑا ہے - میں نے تو ہندو بھائیوں کو سعودی عرب کے اندر یہ کہتے ہوئے سنا ہے کہ انہوں بابری مسجد توڑ کر ہمارے پیٹ پر لات مارنے کا کام کیا ہے - آج بات ہمکو بھی یہاں محسوس کرنی چاہئیے اور جو لوگ اس قسم کی حرکت کرتے ہیں انکو بھی یہ سمجھنا چاہئیے کہ ہندوستان کبھی بھی آئسولیشن میں نہیں جی سکتا ہے - ری ایکشن ہونا ہے اور برا نیچرل ہوتا ہے - لیکن ہم کو تناو کو کم کرکے ایسا ماحول پیدا کرنا چاہئیے کہ نہ ادھر سے ایسا موقع ملے اور کوئی اپنے مفاد کیلئے اسکا فائدہ نہ اٹھا سکے - شکریہ -]

उपसभापति : माथुर साहब आप कहना चाह रहे हैं।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर (उत्तर प्रदेश) : मैंने यही सवाल चार दिन पहले 26 तारीख को उठाया था। उस समय जो प्रस्ताव का मसौदा था और जो शक और शुबहे थे उस समय व पूरे हो गये है। मसौदे को आज पूरा एक स्ताव 'ास करके स्वीकार किया गया है। गुजराल साहब ने जो एक सवाल उठाया है उसके साथ मैं पूर्णतया सहमत हूं केवल एक पहलू पर निगाह डालना चाहता हूं। वह यह है कि एक नया सिद्धांत दुनिया में इस प्रस्ताव के सामने रखा गया है—सेल्फ डिटरमिनेशन और वह भी मजहब के आधार पर। यह सिद्धांत हमको स्वीकार नहीं है और दुनिया को भी स्वीकार नहीं होना चाहिए। नम्बर एक, किसी भी विदेशी ताकत को, विदेशी को या किसी को भी यह अधिकार नहीं है कि किसी देश के किसी हिस्से को किसी आधार पर सेल्फडिटरमिनेशन का अधिकार है। हम हिंदुस्तान म सेल्फ डिटरमिटेशन के अधिकार को नहीं मानते हैं। यदि इसी प्रकार का सिद्धांत माना जाए तो जिन्हें इस्लामिक कंट्रीज कहा जाता है उनमें जाने कितनी टूटते में आ जायेंगी। एक तो सेल्फ डिटरमिनेशन का सिद्धांत और वह भी मजहब के आधार पर यह त्यंत खतरनाक है: सरकार को चाहिए कि वह अन्य जो दुनिया के देश ह उनको सचेत करे और जो इस्लामिक कंट्रीज हैं उन ं से जो आज कम से कम विरोधी नहीं है, मित्र न भी हों, उनको भी इस सिद्धांत के विषय ; सचेत करना चाहिए।

It can recoil on ou.

आपके ऊपर भी असर पड़ सकता है। खुल्लमखुल्ला आप इसको विरोध न करते। लेकिन कम से कम ह; दुख है कि उन मित्र देशों ते भी इस प्रश्न पर समर्थन किया है। पाकिस्तान के साथ उनको हमदर्दी एक मजहब के आधार पर हो सकती है जो मैं समझता हूं कि गलत है, आज दुनिया में नहीं होनी चाहिए। लेकिन यह एक फैक्ट है। एक इस्लामिक मूवमट है। यह फैक्ट है। इसको हम स्वीकार करना चाहिए और मैं भी इस बात से सहमत हूं कि जो वहां पर गलत बातें कहता है उसका असर हमारे ऊपर पड़ता है और पड़ना नहीं चाहिए और पड़ेगा नहीं। मैंने उस दिन भी अर्ज किया जसे इन्होंने धमकी दी कि ह ारा बायकाट कर देंगे और हमारे ताल्लुकात तोड़ लेंगे तो मैंने उस दिन भी यही कहा था और आज फिर कहना चाहता हूं कि हिंदु, मुस्लिम, सिख और ईसाई आज जितने

मजहब के लोग हैं उनमें इतनी ताकत है कि मिलकर जो हमारे सामने कठिन ई है उसका मुकाबला कर सकते हैं। हमें उसकी चिंता नहीं है। तेल न दें। अव्वल तो देंगे। अगर न दें तो न दें। तो भी हम हल कर लेंगे। लेकिन मैं सरकार से इतना कहना चाहता हूं कि इस बात को केवल शांति से न देखें। इसके लिए डिप्लोमैटिक स्तर पर विभिन्न प्रकार के कदम उठाने चाहिए।

उपसभापति :

Do you also want to say something?

जरा संक्षेप में।

श्री दिग्विजय सिंह (बिहार) : बहुत संक्षेप में। माननीय उपसभापति महोदया, मैं शायद इस बात को नहीं कहता। गुजराल साहब की बात से मैं पूरी तरह सहमत हूं और गुजराल साहब ने पूरी बातों को सदन में साफ तौर पर रखने की अपनी तरफ से कोशिश की लेकिन सुरेश कलमाडी साहब और माथुर साहब ने थोड़ा इस मसले को दूसरा रंग देने का जो प्रयास किया उससे मैं थोड़ा चिंतित हूं। मैं आज इस सदन के सामने बड़े विश्वास से इस बात को कह रहा हूं कि दुनिया की कुछ ताकतें जो मुस्लिम देश हमारे दोस्त हैं और हमारे उनके साथ सम्बन्ध हैं उनको बिगाड़ने में लगी हुई है। पाकिस्तान भी उसका एक हिस्सा है। भारत को बहुत ही गम्भीरता से और मौके की नजाकत को समझते हुए इस पर कदम उठाना चाहिए। जब मैं इस बात को कह रहा हूं, तो मेरे दिमाग में एक बात है। आज कुछ ताकतें जो अपने को साम्राज्यवादी ताकतें कहती है दुनिया में, वह ताकतें एक ऐसा माहौल बना रही है कि दुनिया को खतरा है किसी से, तो इस्लाम से खतरा है और उसके नाम पर वह कभी इस्लामिक फंडामेंटेलिज्म का माहौल बना रही है, कभी टैररिज्म का माहौल बना रही है और भारत का इस्तेमाल इस माहौल में अपने को एक इंस्ट्रुमेंट के रूप में करना चाहती है।

इसलिए मैं भारत के लोगों से, भारत की सरकार से–दुर्भाग्य है कि इस समय कोई मंत्री अभी बैठा हुआ नहीं है, अंगर साहब अपने में मशगूल हैं, लेकिन फिर भी मैं इस सदन के माध्यम से सरकार को कहना चाहता हूं कि मौके की नजाकत को समझें और ओ०आई०सी० का जो रिपोर्ट आया है, उस रिपोर्ट को बहुत गंभीरता से लेने की जरूरत नहीं है, क्योंकि हर ऐसे सम्मेलनों में कुछ मजबूरियां होती हैं देशों को ऐसे मामले को एडाप्ट कर लेने में, और मेरा पूरा यकीन है कि जो राष्ट्र उसमें शामिल थे, उन राष्ट्रों की पूरी हमदर्दी, जो भी भारत और कश्मीर के मसले पर आज रेजोल्यूशन पास हुआ है, उससे अलग है।

इस लिए उसको बहुत गंभीरता से लेने की जरूरत नहीं है और मौके की नजाकत को समझते हुए बेहतर तो यह है कि उसे इग्नोर ही किया जाए। यही मैं कहना चाहता हूं।

Killings of Police Officers by Sandalwood Smuggler a Veerappan

SHRI V. NARAYANASAMY (Pondicherry; ; Madam Deputy Cnairman, I thank you lor giving me an opportunity to raise a very important maiter. Madam, the sandalwood smuggler Veerappan's gang killed 22 commandos and injured more than 30 police officers near Paiar bride at Tamil Nadu—Karnataka border who went 'for combing operation in that area. For more than 20 years, the sandalwood smuggler Veerappan's gang has been operating in Salem and Periyar districts of Tamil Nadu and in the Mysore district of Karnataka. They used to smuggle sandalwood and supply it to various notorious smugglers and to the people who were involved in the sandalwood business in this country and also abroad. Whenever the Tamil Nadu police tried to arrest Veerappan and his gang, they used to escape to Karnataka through Tamil Nadu-Karnataka border. Whenever Karnataka police started operation they used to escape into Tamil Nadu. ' There fore, he was escaping from the police